अनुक्रमणिका

जिज्ञासा खंड (अ)

संहिता खंड (ब)

जातक खंड (स) : जन्मकुंडली गत फलादेश

उपचार खंड (द)

विषय प्रवेश

ज्योतिष शास्त्र की प्राचीनता वेदों में सिद्ध है। प्राचीन काल से ही वेद के छह अंगों में ज्योतिष शास्त्र मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है। वैदिक काल और वराहमिहिर के बीच 18 ज्योतिषशास्त्र प्रवर्तक धुरन्धर आचार्यों का उल्लेख प्राप्त होता है।

सूर्यः पितामहो व्यासो, वसिष्ठोऽत्रिपराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिः मनुरंगिरा।।
लोमेशः पोलिशश्चैव, च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टादशाश्चैते, ज्योतिष् शास्त्र प्रवर्तकाः।।

सूर्य सिद्धांत (भूमिका)

पर दुर्भाग्य यह है कि इन सब ज्योतिष शास्त्र प्रवर्तक आचार्यों का क्रमिक इतिहास हमें प्राप्त नहीं है। चार-पाँच आचार्यों को छोड़कर बाकी सभी की वास्तविक कृतियां भी ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों को प्राप्त नहीं हैं। केवल नाम ही चर्चित है। कई विद्वानों के ग्रन्थ उपलब्ध हैं तो उनके काल का पता नहीं। जिनमें **बृहद्पाराशर होराशास्त्र** के रचयिता पराशर, **भृगुसंहिता** के रचयिता महर्षि भृगु, **सत्यजातकम्** के रचयिता सत्याचार्य, मीनराज कृत **बृहद्यवनजातक** इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष शास्त्र को नई ऊंचाइयां प्रदान करने वाले, तीनों स्कन्धों के निष्णात ज्ञाता दैदीप्यमान सूर्य के समान तेजस्वी वराहमिहिर का सम्पूर्ण साहित्य हमें विधिवत प्राप्त है। परन्तु उनका काल भी संदिग्ध है। अंग्रेजों के अनुयायी इतिहासकार उनका जन्म ईसा की पांचवीं शताब्दी का मानते हैं जबकि वराहमिहिर ईसा पूर्व राजा विक्रमादित्य उर्फ चन्द्रगुप्त मौर्य के राजकीय पंडित थे और वर्तमान में मिहरौली (मिहिरालय) में स्थित कुतुबमीनार उनकी प्राचीन वेधशाला थी। जिसपर जोधपुर विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत शोध ग्रंथ भोज संहिता के लेखक द्वारा लिखा गया जो प्रकाशित हो चुका है।

वैदिक काल के पश्चात वराहमिहिर के पूर्व ज्योतिष की स्थिति

यह बहुत प्रसन्नता का विषय है कि ज्योतिष शास्त्र के प्रति वराहमिहिर का दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। उन्होंने अपने साहित्य में प्रसंगवश उदारता पूर्वक अनेक
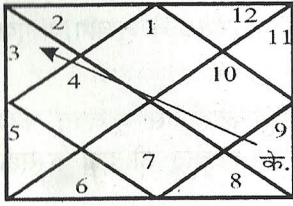
होगा। जन्मस्थान के दूरस्थ प्रदेशों के कमाएगा, उच्चाधिकारी होगा पर समाज का सेवक होगा। जातक बहुत तरक्की करेगा। इन पर इष्टकृपा बृहस्पति की कृपा विशेष होगी। ऐसे जातक के आशीर्वाद से निसंतान को भी सन्तति होगी।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार धनु राशिगत नवम भाव में स्थित केतु वाला जातक जीवनपर्यन्त सही भाग्योदय हेतु लालायित रहेगा। जातक पराक्रम प्राप्ति हेतु चेष्टवान बना रहेगा।

निशान–बाप का हुक्म मानने वाला बेटा। ऐसे जातक की जंघा पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होता है।

दशा–केतु धनुराशि में होने से गुरुवत् फल देगा। अतः इस कुंडली में बृहस्पति की स्थिति का अध्ययन करने के बाद केतु की दशा की सही फलावट हो सकेगी क्योंकि राहु और केतु का कोई स्वतंत्र अस्तित्त्व नहीं होता ये जिस राशि व ग्रह के साथ बैठे हैं 'तत्वत्' हो जाते हैं। वैसे केतु की दशा यहां शुभ फल देगी। जातक का भाग्योदय कराएगी।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को महान पराक्रमी एवं आध्यात्मिक विद्या का जानकार बनाता है।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु क साथ चन्द्रमा जातक को माता का सुख देगा परन्तु मामा से विचार नहीं मिलेंगे।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को पैतृक सम्पत्ति दिलाएगा पर थोड़ा विवाद होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को प्रखर पराक्रमी बनाएगा। जातक बुद्धिशाली व चतुर दिमाग वाला होगा।
5. **केतु+बृहस्पति**–केतु के साथ बृहस्पति जातक को राजा तुल्य वैभवशाली बनाएगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकेगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को व्यापार प्रिय बनाएगा। जातक प्रायः ठेकेदार होगा।

उपाय– 1. रंग-बिरंगे कपड़े न पहनें।

2. तिल, तैल, काले-नीले पुष्प, कस्तूरी व काले वस्त्रों का दान शनिवार के दिन करें।
3. केतु शान्ति का प्रयोग करें।

मेष लग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में
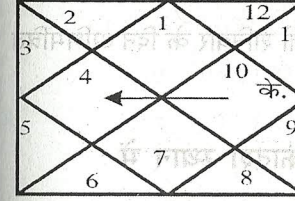
मेष लग्न के दशम स्थान में केतु मकर राशि का होगा। मकर राशि पृथ्वी तत्त्व प्रधान एवं चरसंज्ञक है। ऐसा जातक नौकर-चाकर सेवकों से युक्त सुखी व्यक्ति होता है। जातक खेलों का शौकीन एवं दक्ष खिलाड़ी होगा। जातक के भाई-बन्धु इसकी दौलत को बरबाद करेंगे फिर भी जातक उनको माफ करता रहेगा। उनकी मदद करता रहेगा। जातक चाल-चलन का नेक एवं साफ दिल होगा।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार मकर राशिगत दशमस्थ केतु जातक को राज्य (सरकार) में पद प्राप्ति हेतु लालायित बनाए रखता है। अथवा सरकार से ठेका, वजीफा, सम्मान प्राप्ति हेतु जीवन भर प्रयत्नशील रहेगा।

निशान–चुपचाप अपने रास्ते पर चलने वाला मौकाबाज। ऐसे जातक के घुटने पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होता है।

दशा–केतु की दशा शुभ रहेगी। केतु यहां शनि तुल्य फल देगा अतः शनि की स्थिति का अध्ययन करने के बाद ही केतु की दशा का सही फलादेश हो पाएगा।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को राजसुख देगा। उत्तम विद्या देगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु क साथ चन्द्रमा माता की सम्पत्ति दिलाएगा। वाहन का सुख दिलाएगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ उच्च का मंगल **'रुचक योग'** की सृष्टि करेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को बुद्धिशाली एवं परिवार का शुभ चिन्तक बनाएगा।
5. **केतु+बृहस्पति**–केतु के साथ बृहस्पति का होगा ऐसा जातक आध्यात्मिक राह का पथिक एवं धर्मध्वज होगा।

- ❑ तृतीयभावगत रहने से जातक तेजस्वी, भोगी, ऐश्वर्य्यवान्, बलवान् और सर्वप्रिय परन्तु मानसिक–चिन्ता से युक्त होता है। ऐसे जातक को भातृ सुख का प्राय: अभाव होता है। और उसके बाहों में पीड़ा होती है। उच्च अथवा स्वगृही होने से सुख होता है। परन्तु यदि शुभग्रह युक्त हो तो कंठ में कोई चिह्न होता है। तृतीयस्थ केतु रहने से बारहवें अथवा 13वें वर्ष में भाई का सुख होता है।

  –ज्योतिष रत्नाकर (देवकीनन्दन सिंह) अ. 25/ पृ. 597

- ❑ कुंडली के तीसरे घर में केतु बैठा हो तो जातक भूत-प्रेतों पर विश्वास रखने वाला, तंत्र शास्त्र का भक्त, बेकार की बातें करते रहने वाला बकवादी, स्वभाव से चंचल होता है। वह अपने शत्रुओं का नाश करने वाला, धनभोगी तथा ऐश्वर्य का भोग करने वाला होता है। ऐसा जातक दीर्घायु, बलवान्, धनवान् और यशस्वी एवं अन्न सुख व स्त्री सुख से परिपूर्ण होता है।

  लाल किताब वालों ने इस केतु को **'टुन-टुन'** करने वाला कुत्ता कहा है। भाई वगैरह और ससुरालिए मौका पड़ने पर गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले होंगे।

  –लाल किताब/ पृ.149

- ❑ "Ketu in the 3rd house aspected by malefic planet, can indicate diseases of the neck." ***—Keven W. Barrett (Aastridia), p. 60***

मिथुन लग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में
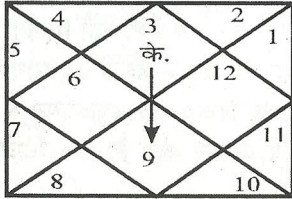
मिथुन लग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। केतु प्रथम स्थान में मिथुन (नीच) राशि में है। केतु के यहां बैठने से व्यक्ति को आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति शक्तिशाली होता है। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा परंतु यदि सप्तमेश बृहस्पति की स्थिति अनुकूल न हो तो **'द्विभार्यायोग'** बनता है।

दृष्टि–केतु की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः गृहस्थ सुख में बाधा, थोड़ी कमी रहेगी।

निशानी–जातक को उच्च स्थान से गिरने का भय रहता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा, पर थोड़ा संघर्ष भी रहेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **केतु+चंद्र–**जातक की पत्नी सुंदर होगी।
2. **केतु+सूर्य–**जातक क्रोधी होगा।
3. **केतु+मंगल–**जातक का व्यक्तित्त्व संघर्षशील होगा।
4. **केतु+बुध–**ऐसा जातक कुतर्की होगा।
5. **केतु+बृहस्पति–**ऐसा जातक धर्मध्वज होगा।
6. **केतु+शुक्र–**जातक का स्वभाव रंगीन एवं अस्थिर रहेगा।
7. **केतु+शनि–**जातक मानसिक रूप से उद्विग्न रहेगा।

उपाय– 1. केतु के तांत्रिक मंत्र के एक लाख सत्रह हजार जाप कर, दशांश हवन, कुशा, तिल, कस्तूरी व कपूर से करें।

2. शनिवार के दिन काले कपड़े का दान करें।

मिथुन लग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में
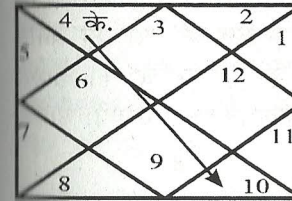
मिथुन लग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां द्वितीय स्थान में केतु कर्क (शत्रु) राशि में है। दूसरे घर में केतु को लालकिताब वालों ने 'अच्छा हुक्मराज' की संज्ञा दी है। ऐसे व्यक्ति की किस्मत में उतार-चढ़ाव तो आता है पर अंततः शुभ फल मिलता है। ऐसे व्यक्ति वाचाल होते हैं तथा उच्च पद की प्राप्ति इन्हें सरलता से हो जाती है।

दृष्टि–केतु की दृष्टि यहां अष्टम भाव (मकरराशि) पर होगी, फलतः गुप्त रोग या बीमारी का भय रहेगा।

निशानी–धन एकत्रित करने के मामले में बहुत संघर्ष करना पड़ता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा धनसंग्रह हेतु संघर्ष की द्योतक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **केतु+चंद्र–**कुटुम्ब एवं धन संबंध में हानि।
2. **केतु+सूर्य–**जातक के पास धनसंग्रह कठिनता से होगी।

नवमस्थ केतु के बारे में पूर्वाचार्यों के मत एवं भोज संहिता

- "नवमस्थानगतः केतुः बालत्वे पितृकष्टकृत।
  भाग्यहीनो विधर्मश्च म्लेच्छाद् भाग्योदयो भवेत्॥" *—गर्ग*
  अर्थ—नवम में केतु ही तो बचपन में पिता की कष्ट, भाग्योदय न होना, विदेशियों से लाभ, ये फल प्राप्त होते हैं। *—गर्ग*
- आचार्य वराहमिहिर एवं पृथुयश ने जन्मकुंडली में केतु की विभिन्न स्थितियों को लेकर फलादेश नहीं लिखा। जन्मकुंडली में केतु हमेशा राहु से सप्तम स्थान पर होता है। अतः भृगुसूत्रकार ने केतु पर अलग से फलादेश लिखने की आवश्यकता नहीं समझी।
- जिस मनुष्य के जन्मलग्न से नवमस्थान में केतु हो तो मनुष्य के कलेशों का नाश होता है। उसे पुत्र प्राप्ति की इच्छा रहती है। अर्थात इसे पुत्र संतान का अभाव रहता है। इसका भाग्योदय म्लेच्छों द्वारा होता है। इसे सगे भाइयों से पीड़ा और भुजाओं में रोग होता है। लोग इसकी तपश्चर्या तथा दान के विषय में हंसी-खिल्ली उड़ाते हैं। अर्थात इसका तप और दान दंभ (ढोंग) समझा जाता है। *—चमत्कार चिन्तामणि, अ. 15*
- जिस मनुष्य के जन्मकाल में केतु नवमभाव में हो तो उसे पुत्र और धन का लाभ होता है। सदा म्लेच्छों से लाभ और सब कष्टों का नाश होता है। सहोदर भाइयों को कष्ट और दोनों भुजाओं में अनेक प्रकार के रोग होते हैं। तपस्या और दान आदि धार्मिक-कृत्यों में सदा उपहास होता है। अर्थात उसकी तपश्चर्या तथा दान शास्त्रविधि के अनुसार न होने से उपहासास्पद होता है। *—जीवनाथ (भावप्रकाश) अ. 2*
- केतु अष्टम हो तो मनुष्य क्रोधी, वक्ता, धर्मपरिवर्तन करने वाला, परनिन्दक, शूर, पितृ द्वेष्टा, बहुत दम्भी, निरुत्साही तथा अभिमानी होता है। *—वैद्यनाथ (जातकपारिजात)*
- नवम केतु हो तो धर्मनष्ट होता है। तीर्थयात्रा की इच्छा नहीं होती। विधर्मी से लाभ पाने की इच्छा होती है, शरीर और बाहु में रोग होते हैं। तप और दान से हानि और वृद्धि होती है। *—बृहदयवनजातक (मीनराज)*
- नवम में केतु से क्लेश दूर होते हैं। पुत्र की इच्छा रहती है। विदेशियों द्वारा भाग्योदय होता है। भाइयों को कष्ट होता है। बाहु में रोग होता है। मनुष्य तप वा दान करे तो लोगों में हंसी होती है। *—मानसागरी/ अ. 2*

- नवम में केतु हो तो मनुष्य पराक्रमी, सदा शस्त्र धारण करने वाला होता है। मित्र, धन, धर्म वा शील से रहित और बन्धु और पुत्र के विषय में चिंतित होता है। *—जागेश्वर*
- केतु नवम हो तो यह पापी पिता के सुख से हीन, दरिद्री, वा अच्छे लोगों से निन्दित होता है। *—मन्त्रेश्वर (फलदीपिका) अ. 8*
- नवमभाव में केतु हो तो मनुष्य को कष्टनाश, पुत्रसुख, म्लेच्छो के द्वारा भाग्य की वृद्धि, कारणवश पीडा, बाहु में रोग, तपस्या और दान से हर्ष आनन्द की वृद्धि ये फल प्राप्त होते है। *—ढुण्ढिराज (जातकाभरण)*
- यह धर्म विरोधी, दुराचारी, झूठ बोलने वाला, विचित्र मत का अनुयायी, क्रोधी, वक्ता, दूसरों की निन्दा करने वाला, भाई से झगड़ने वाला, शुर, बलवान, अभिमानी होता है। *—चित्रे*
- **गृहे केतुनामि स्थिते धर्मभागे श्रियो राजराजाधिप मन्त्री।
  नर कान्तिकीर्त्यादिबुद्धयादिदानै। कृपावान् नरों धर्मकर्मप्रवृद्धः॥**
  यह राजा अथवा राजा का मन्त्री होता है। कान्ति, कीर्ति, बुद्धि, उदारता से सम्पन्न, दयालु धार्मिक होता है। *—ह. ने. काटवे*
- जिसके जन्म काल में केतु नवम स्थान में होता है वह जातक धर्म का नाशक, सुन्दर तीर्थ में घूमने की बुद्धि वाला, दुष्ट से भाग्य की सिद्धि करने वाला, मातृ कष्ट से युक्त, हाथ के रोग से पीड़ित और तपस्या व दान से हंसी करने बाला होता है।
  —होरारत्न (बलभद्र) अ. 3/ श्लोक 9, पृ. 316
- नवमभावगत रहने से बाल्यावस्था में पिता को कष्टप्रद, समाज से उपहास और दनादि शुभ क्रिया से हीन, धर्मभ्रष्ट पुत्र-भ्रातृ-चिन्ता-युक्त और बाहु रोग से पीड़ित पर क्लेश रहित और अच्छे मस्तिष्क वाला होता है। तथा उसके भाग्य की वृद्धिम्लेच्छ द्वारा होती है। नवमस्थ केतु रहने से उन्नीसवें अथवा उन्तीसवें वर्ष में पिता को अरिष्ट होता है।
  —ज्योतिष रत्नाकर (देवकीनन्दन सिंह) अ. 25/ पृ. 598
- नवम भाव में केतु वाला जातक व्यवहार-कुशल नहीं होता। लोकमत के विरुद्ध आचरण करने से लोकनिन्दा एवं कष्ट झेलने पड़ते है। वह अपने छोटे भाइयों को कष्ट देता है। तथा अंतिम आयु में धार्मिक बनकर तपस्या, दान आदि के आनन्द को प्राप्त होता है। *—रावण संहिता/ पृ. 233*

निशानी–ऐसा जातक साहसी होता है, संकट के समय नहीं घबराता।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा अप्रिय रहेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा धन के घड़े में छेद का काम करेगा। जातक आर्थिक तंगी में रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को पिता के सुख से वंचित करेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक की वाणी में कड़वाहट देगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध धन प्राप्ति में रुकावट डालेगा।
5. **केतु+बृहस्पति**–केतु के साथ बृहस्पति मित्रों से, रिश्तेदारों से असहयोग कराएगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक की वाणी विनम्र कराएगा पर जातक की भाषा उतावलापन लिए हुए होगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ होने से जातक धनी होगा पर केतु के कारण जातक के 50% धन का अपव्यय व्यर्थ के कार्यों में होगा।

मकर लग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में
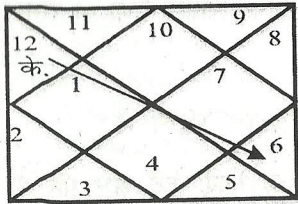
मकर लग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां तृतीय स्थान में मीन राशि में स्वगृही है। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी एवं कीर्तिवान् होता है, परन्तु जातक को भाई-बहनों के पक्ष में परेशानी तथा संकट का सामना करना पड़ता है। जातक का मित्र बहुत होते हैं। जनसम्पर्क तेज रहता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ केतु की दृष्टि भाग्य भवन (कन्या राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होता है तथा निरन्तर प्रयत्न से उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ता है।

निशानी–भाइयों में परस्पर गुप्त ईर्ष्या की भावना रहेगी। सभी को एक-दूसरे की उन्नति-कीर्ति से जलन रहेगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा अनुकूल फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक को कुटुम्ब सुख देगा। जातक पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को पराक्रमी तो बनाएगा पर उसे बड़े भाई का सुख नहीं होगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को पराक्रमी बनाएगा। परन्तु माता का एवं भाइयों का सुख कमजोर होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध भाई-बहनों में मनोमालिन्यता उत्पन्न करेगा पर दूसरे समाज में कीर्ति होगी।
5. **केतु+बृहस्पति**–केतु के साथ बृहस्पति कुटुम्ब सुख देगा। जातक को मित्रों से लाभ होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ उच्च का शुक्र शुभ फल देगा। जातक पराक्रमी व यशस्वी होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि धन प्राप्ति के प्रयासों में थोड़ी रुकावटें डालेगा।

मकर लग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
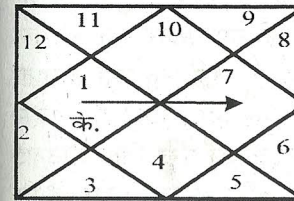
मकर लग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां चतुर्थ स्थान, मेष (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक को जीवन में माता के सुख की कमी रहती है। जातक की माता कष्ट पाती है। घरेलू परेशानियों से जातक का जीवन कष्टपूर्ण रहता है। ऐसा जातक कठिन परिश्रम, साहस व हिम्मत के माध्यम से घर का निजी मकान बनाने में सफल होता है।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत केतु की दृष्टि दशम स्थान (तुला राशि) पर रहेगी। जातक को रोजी-रोजगार की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

निशानी–जातक को मातृ (जन्म) भूमि का त्याग करना पड़ता है। जातक परदेश जाकर कमाता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।